Q- "Napoleon was the child of the revolution, but in many ways he reversed the aims and principles of the movement from which he sprang." Comment.

Ans- नेपोलियन को क्रान्ति का शिशु कहा जाता है क्योंकि सामान्य पृष्ठभूमि का होने के बावजूद वह अपनी प्रतिभा की बदौलत सत्ता के शीर्ष तक पहुँचा। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि क्रान्तिकारी परिस्थितियों ने 'वंशगत श्रेष्ठता' की व्यवस्था को समाप्त किया तथा 1799 तक एक प्रकार की अराजकता ने एक शक्तिशाली सत्ता की आवश्यकता को भी जन्म दिया। युद्धों में उसकी सफलता के साथ क्रान्ति के आरंभिक चरण में कृषक, मध्य वर्ग तथा अन्यों के समर्थन की भी इसमें भूमिका थी। हालांकि शासक बनने के बाद उसके सम्राट के रूप में कार्यों ने क्रान्ति के स्वतंत्रता, समता व बन्धुता को निम्न प्रकार धूमिल किया-

1- शासन की सारी शक्ति एक व्यक्ति में निहित होना

Scanned by CamScanner

2- संविधान में प्राकृतिक अधिकारों जैसे - अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, जीवन की गारण्टी आदि की व्यवस्था न होना

3- शिक्षा के स्तर पर आदेश व अनुशासन पर बल

4- प्राकृतिक न्याय की अनुपलब्धता के तहत पुलिस द्वारा बिना कारण बताए गिरफ्तारी, बंदी प्रत्यक्षीकरण की व्यवस्था नहीं

5- केन्द्रीयकरण की बूर्बों वंशीय प्रणाली

6- आर्थिक स्तर पर मुक्त व्यापार' के स्थान पर राज्य नियंत्रित आर्थिक व्यवस्था जैसे - महाद्वीपीय व्यवस्था

हालांकि यदि उसके अन्य कार्यों का मूल्यांकन किया जाये तो हम पाते हैं कि उसमें क्रान्ति की विरासत व पुरातन व्यवस्था' दोनों का मेल था। इसके तहत क्रान्ति मे से नेपोलियन ने -

1- धार्मिक सहिष्णुता, 2- धर्मनिरपेक्षता, 3- कानून की दृष्टि में समता 4- लोक सेवाओं में सभी को समान अवसर, 5- राष्ट्रीय करों का समान वितरण 6- योग्यता आधारित व्यवसाय न कि जन्म

Scanned by CamScanner

या वर्ग आधारित 7- अनिवार्य सैन्य सेवा 8- व्यावसायिक नौकरशाही तथा कल्याणकारी राज्य के सिद्धान्तों को भी अपनाया।

निष्कर्षत:, कहा जा सकता है कि नेपोलियन क्रान्ति के द्वारा पैदा की गयी संभावना एवं अराजकता की उपज था तथा जब सत्ता उसके पास आयी, तो उसके माध्यम से उसने समानता के क्रान्तिकारी सिद्धान्त को तो बहुत हद तक स्थापित किया, लेकिन स्वतंत्रता व बन्धुत्व की उसने हत्या कर दी।

Scanned by CamScanner

Q- "The French Revolution (1789) really achieved far less than what it intended to effect." Comment.

उत्तर- फ्रान्स की क्रान्ति का मूल उद्देश्य फ्रांस में 'स्वतंत्रता, समता व बन्धुत्व' की भावना की स्थापना था। इसकी स्थापना किस हद तक हुई इसके लिए क्रान्ति के प्रभावों को तात्कालिक व दीर्घकालिक प्रभावों के रूप में बांटकर देखना होगा।

तात्कालिक प्रभावों के अन्तर्गत फ्रांस में प्रारंभ में विधि का शासन, शक्ति पृथक्करण, गणतंत्र आदि की प्राप्ति हुई हालांकि नेपोलियन तक आते-आते यह प्रबुद्ध निरंकुशता पर आधारित राजतंत्र की ओर मुड़ गया। सामाजिक स्तर पर इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि विशेषाधिकारों के सर्वेक्षण के लिए अन्त के रूप में दिखती है, बौद्धिक व सांस्कृतिक स्तर पर जहाँ इसका प्रभाव चर्च के राष्ट्रीयकरण व धार्मिक सहिष्णुता की नीति के रूप में सामने आया वहीं आर्थिक

Scanned by CamScanner

स्तर पर भी इसने 'योग्यता आधारित व्यवसाय' को स्थापित किया।

यूरोप पर इसका प्रभाव '२5 वर्षीय युद्ध' के रूप में आया। प्रारंभ में यूरोप के लोगों ने नेपोलियन का स्वागत एक मसीहा के रूप में किया हालांकि जब नेपोलियन ने 'फ्रांसीसी साम्राज्यवाद' को आरोपित करना चाहा तो इसकी परिणति राष्ट्रवादी युद्ध के रूप में हुई जिसने आगे चलकर 'वियना व्यवस्था' जैसी प्रतिक्रियावादी व्यवस्था को स्थापित किया।

यदि क्रान्ति के दीर्घकालिक प्रभावों को देखा जाये तो इसने विश्व स्तर पर राष्ट्रवाद, उदारवाद तथा ~~धर्मनि~~ धर्मनिरपेक्षता के विकास को प्रवृत्त किया जिसका प्रमुख उदाहरण 1830, 1848 की क्रान्ति के साथ इटली व जर्मनी का एकीकरण भी है। हालांकि इसका नकारात्मक पक्ष यह भी है कि उग्र होती राष्ट्रवाद भावना ने आगे चलकर विश्व युद्ध को भी जन्म दिया।

Scanned by CamScanner

वस्तुत: फ्रान्स की क्रान्ति की कामयाबी को इसी रूप में देखा जा सकता है कि इसने प्रबोधन की विचारधारा को राजनैतिक कार्यक्रम प्रदान किया तथा 'पुरातन व्यवस्था' का ध्वंस कर जीवन की वैकल्पिक व्यवस्था की स्थापना की। हालांकि इसके लिए यूरोप की दशाएं भी अनुकूल थीं जो प्रबोधन की विचारधारा के विश्व स्तर पर प्रसार, औद्योगिक व वाणिज्यिक क्रान्ति के विस्तार के साथ जनसंख्या वृद्धि व वैज्ञानिक खोजों के रूप में दिखता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि फ्रांस की क्रान्ति का इतना महत्व जरूर है कि इसने कम समय में ज्यादा परिवर्तन को संभव बना दिया।

Scanned by CamScanner